कृषि विज्ञान केन्द्र, रामगढ़ में पावर टिलर के उपयोग, रिपेयरिंग एवं रख-रखाव विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन।

पावर टिलर को बढ़ावा देने के लिए बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, रामगढ़ में किसानों को पावर टिलर के उपयोग, रिपेयरिंग एवं रख-रखाव विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। यह प्रशिक्षण 01 अगस्त से शुरू हुई थी। प्रशिक्षण के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ आशुतोष उपाध्याय, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना थे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना के डॉ अनिल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं डॉ विकास सरकार, प्रधान वैज्ञानिक रहे। प्रशिक्षण का समापन निदेशक महोदय द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण कर किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ दुष्यन्त कुमार राधव ने प्रशिक्षण के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथियो का स्वागत किया तथा

उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण का आयोजन सी.आर.पी. कृषि यांत्रिकरण एवं परिशुद्धता खेती परियोजना के अंतर्गत दिया जा रहा है। इस विषय पर केन्द्र मे तीन प्रशिक्षण पहले दिये जा चुके हैं। इस विषय पर यह चौथा प्रशिक्षण है और इस प्रशिक्षण में रामगढ़ जिले के विभिन्न गावो के वैसे किसान एवं युवा भाग ले रहे हैं कि जिसके पास

पावर टिलर उपलब्ध है। पावर टिलर मुख्य रूप से छोटे खेतों और पहाड़ी खेतों में जुताई के लिए काफी उपयुक्त है। क्योंकि फसल का अच्छा उत्पादन बेहतर कृषि यंत्रों के उपयोग पर पर भी निर्भर करता है। पावर टिलर यहाँ के कृषि कार्य में अति उपयोगी है। मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को पावर टिलर के उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रशिक्षण में प्राप्त होने वाले ज्ञान को भी उपयोग में लाने कि सलाह दी तथा कहा कि छोटे-छोटे कृषि यंत्रों के उपयोग से किसान कृषि कार्य

में समय बचत के साथ-साथ लागत में कमी तथा लाभ में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। पावर टिलर मुख्य रूप से छोटे खेतों और पहाड़ी खेतों में जुताई के लिए काफी उपयुक्त है। क्योंकि फसल का अच्छा उत्पादन

बेहतर कृषि यंत्रों के उपयोग पर पर भी निर्भर करता है। पावर टिलर यहाँ के कृषि कार्य में अति उपयोगी है। विशिष्ठ अतिथि डॉ अनिल कुमार सिंह एवम् डॉ बिकास सरकार ने प्रशिक्षणार्थियों को पावर टिलर के उपयोग रिपेयरिंग एवं रख-रखाव के बारे में तथा कृषिपयोगी विभिन्न छोटे-छोटे कृषि यंत्रो से अवगत कराते हुए उनके विषय में विस्तृत जानकारी दी। शोध केन्द्र, प्लाण्डु, रांची से आये प्रधान वैज्ञानिक डॉ बिकास दास एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ संतोष माली ने कहा कि खेती को आधुनिक बनाने के लिए प्रति दिन नई-नई तकनीकों का अविष्कार हो रहा है। इन तकनीको की मदद से खेती करना आसान होते जा रहा है। प्रशिक्षण में प्राप्त होने वाली जानकारी को उपयोग में लाने से जरूर लाभ होगा। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ इन्द्रजीत ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान पटना के वैज्ञानिक डॉ प्रेम कुमार सुंदरम एवं डॉ पवन जीत ने प्रशिक्षण के दुसरे दिन मंगलवार को प्रशिक्षणार्थियों को बताया कि खेती-बाड़ी में कृषि यंत्रों को अहम स्थान दिया गया है। कृषि यंत्रों के उपयोग साथ-साथ उसके रख-रखाव तथा मरम्मत कि जानकारी होने से किसानों को उनके कृषि में लाभ की बढ़ोत्तरी होगी तथा कृषि कार्य सुगम होगा। डॉ धर्मजीत खेरवार ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी से पावर टिलर रिपेयरिंग रोगगार में भी मदद मिल सकेगी। इस प्रशिक्षण में जिले के विभिन्न गावों के 40 किसान प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किया। समापन समारोह के दौरान केंद्र के सनी कुमार, शशिकांत चौबे एवं सी.आर.पी. परियोजना के इंजिनियर रविन्द्र कुमार रवि समेत कई अन्य किसान उपस्थित रहे।